श्री जिनकान्तिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट

जहाज मंदिर, पो. मांडवला- 343042 जिला-जालोर राज.

प्रेस विज्ञप्ति

नवप्रभात

उपाध्याय मणिप्रभसागरजी म.

एक शब्द पर मैं चिंतन कर रहा था।

शब्द था- मालामाल!

मैं विचार में पडा। यह शब्द थोडा आकर्षक लग रहा था।

प्रथम क्षण में इस शब्द का जो अर्थ मानस में स्पष्ट हुआ, वह था- मालामाल हो जाना अर्थात् अथाह संपत्ति प्राप्त कर लेना।

यह शब्द लोगों को बहुत भाता है। वे तो आशीर्वाद के रूप में भी यही शब्द चाहते हैं।

हर व्यक्ति मालामाल होना चाहता है। गरीब कोई रहना नहीं चाहता।

पर यह शब्द बहुत गहरा है। यह शब्द अध्यात्म से संबंधित है।

इस शब्द में केवल परिणाम नहीं है। इस शब्द में कारण व कार्य दोनों है। निमित्त और उपादान दोनों है। हेतु और परिणति दोनों का समावेश इस शब्द में है।

इस शब्द में दो शब्द हैं- एक माला, दूसरा माल!

माला हेतु अर्थात् कारण है और माल परिणाम!

अर्थात् माला है तो माल है। माला के कारण माल है। जो माला का काम करेगा, वह माल पायेगा।

इसका अर्थ हुआ- यदि माल चाहते हो तो माला फेरो!

माला एक प्रतीकात्मक शब्द है। वह धर्म का प्रतीक है।

अर्थात् धर्म करोगे तो माल पाओगे। यहाँ माल शब्द का अर्थ भी गहरा है। माल शब्द का वह अर्थ नहीं है, जो संसारी आदमी करता है। यह माल शब्द सोना, चांदी, हीरे, रूपये के अर्थ में नहीं है। क्योंकि इस माल का कोई मूल्य नहीं है। मूल्य परिस्थिति के अनुसार है। घटता बढता रहता है।

माल का अर्थ उस संपदा से है, जो असली संपदा है। जिसे पाने के बाद खोना नहीं होता। जिसका मूल्य किसी भी काल में घटता बढता नहीं। क्योंकि वह अनमोल है।

माल का अर्थ है- आत्म संपदा! उसे पाने का अधिकारी वही है, जिसके हाथ में माला है... जिसके आचरण में धर्म है... जिसके हृदय में जिनाज्ञा का वास है।

जटाशंकर

0 उपाध्याय मणिप्रभसागरजी म.

जटाशंकर की मां बहुत धार्मिक थी। जबकि पुत्र का स्वभाव बिल्कुल विपरीत था। मां के मन में आया- मुझे दान पुण्य करना है। मेरा अन्तिम समय आ गया है। उसने अपने स्वभाव के अनुसार वसीयत बनवाई। वसीयत में लिखा-

मेरा बंगला बेच दिया जाये और उससे जो भी राशि प्राप्त हो, उसे मंदिर को दान कर दी जाये।

मां के स्वर्गवास के बाद वसीयत पढी गई। जटाशंकर हैरान हो गया। बंगले का मूल्य लगभग सवा करोड रूपये है। वसीयत के अनुसार बेचना तो होगा। सारा रूपया मंदिर को देना होगा।

जटाशंकर विचार में पड गया। उसने पुनः पुनः वसीयत पढी। और अचानक उसके दिमाग में तर्क पैदा हुआ। मां ने लिखा है- बंगले की राशि मंदिर को देनी है। कितनी राशि होगी, इसका कोई अनुमान नहीं किया गया है। मुझे अपनी बुद्धि का प्रयोग करना होगा।

उसने बुद्धि का उपयोग करते हुए विज्ञापन निकाला- बंगला और उसके साथ एक बिल्ली बेचनी है।

खरीददार लोग आये और मूल्य पूछा!

जटाशंकर ने कहा- बंगले का मूल्य 5 रूपये और बिल्ली का मूल्य एक करोड रूपये! शर्त है कि दोनों को साथ ही खरीदना होगा।

लोग विचार में पड गये। बंगला सिर्फ 5 रूपये का और बिल्ली एक करोड रूपये की! यह गणित समझ में नहीं आई।

पर बंगले का मूल्य तो था ही! लोगों ने सोचा- मूल्य किसका क्या रखा है, इससे क्या फर्क पडता है! बंगला कम से कम सवा करोड का है। कुल मिलाकर एक करोड में ही मिल रहा है। फायदा ही फायदा है।

एक व्यक्ति ने दिया एक करोड का चैक और बिल्ली व बंगला खरीद लिया।

जटाशंकर ने तुरंत वसीयत के अनुसार 5 रूपये मंदिर में दान किया और करोड रूपये का चेक जेब में डाल कर चलता बना।

यह स्वार्थ भरी चतुराई है। संसार के क्षेत्र में व्यक्ति इसी प्रकार चतुराई के आधार पर अपने जीवन का निर्माण करता है। और कर्म बंधन करता है। चिंतन यह करना है कि हम आत्मा के क्षेत्र में... आत्म हित में चतुर कब बनेंगे!

33. ऐसे थे मेरे गुरुदेव

उपाध्याय मणिप्रभसागरजी म.

पूज्य गुरुदेव आचार्य भगवंत की वक्तृत्व शैली अनूठी थी। उन्होंने आगमों का तलस्पर्शी अभ्यास किया था। तो व्यावहारिक वातावरण से भी वे अपने आप को लगातार अप्डेट करते थे।

वे जिस क्षेत्र में विहार करते, उस क्षेत्र में एक अनूठा वातावरण निर्मित होता था। ऐसा कोई शहर नहीं, जहाँ वे पधारे हों और उनके सार्वजनिक प्रवचन न हुए हों!

वे जैन समाज के साथ साथ अन्य समाजों के साथ संवाद स्थापित करने में निपुण थे। इस कारण उन्होंने आगमों के साथ साथ सनातन धर्म के ग्रन्थ गीता, वेद, पुराण, महाभारत, रामायण आदि का पूर्ण अभ्यास किया था। बौद्ध धर्म के धम्मपद, त्रिपिटक आदि ग्रन्थों का तथा मुस्लिम धर्म के कुरान आदि गहन अध्ययन किया था। कुरान पढने के लिये तो उन्होंने एक चातुर्मास में एक मौलवी की सेवाऐं प्राप्त की थी। पूज्यश्री ने कई आयतों का पारायण करके उन्हें स्मृति-पाठ का विषय बनाया था।

उनका कहना था कि मुझे परमात्मा महावीर की वाणी का स्वाद जनता को चखाना है। इसके लिये मैं सभी ग्रन्थों का सहारा लेता हूँ। ताकि अन्य समाजों को भी परमात्मा की वाणी की गहराई का बोध हो।

पूज्यश्री विहार करते हुए जावरा पधारे थे। वहाँ मुस्लिम जनता का बाहुल्य है। तब भारत आजाद नहीं हुआ था। जावरा पर नवाब का शासन था। वे पूज्यश्री के संपर्क में आये। और एक रात को सार्वजनिक प्रवचन नवाब के आग्रह पर उनकी उपस्थिति में आयोजित किया गया।

हजारों की संख्या में मुस्लिम लोग आये हुए थे। कुरआन शरीफ की ला इकरा फिद्दीन, कुल्लुनाशे हुस्ना आदि कई आयतों के आधार पर पूज्यश्री ने 'तकरीर' की। और बुलंदी के साथ कहा- कुरान शरीफ हिंसा की इजाजत नहीं देता। प्रवचन से नवाब साहब और सारी जनता प्रभावित थी।

पूज्यश्री के प्रवचन की गूंज जावरा में वर्षों तक बनी रही थी।

पूज्य आचार्यश्री की 29वीं पुण्यतिथि मनाई गई

परम पूज्य गुरुदेव प्रज्ञापुरूष आचार्य देव श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. की 29वीं पुण्यतिथि जयसिंगपुर में पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री मयंकप्रभसागरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री मेहुलप्रभसागरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री समयप्रभसागरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री विरक्तप्रभसागरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री श्रेयांसप्रभसागरजी म. एवं पूजनीया बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. की शिष्या पूजनीया साध्वी डॉ. श्री नीलांजनाश्रीजी म.सा. पूजनीया साध्वी श्री विभांजनाश्रीजी म.सा. पूजनीया साध्वी श्री निष्ठांजनाश्रीजी म.सा. पूजनीया साध्वी श्री आज्ञांजनाश्रीजी म. की पावन निश्रा में ता. 13 नवम्बर 2014 मिगसर वदि प्रथम सप्तमी गुरुवार को मनाई गई।

पूज्य मुनि मंडल एवं साध्वी मंडल का प्रात: 9 बजे नगर प्रवेश हुआ। तत्पश्चात् गुणानुवाद सभा का आयोजन किया गया। सभा का संचालन पूज्य मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म. ने किया।

इस अवसर पर प्रवचन फरमाते हुए पूज्य गुरुदेव मणिप्रभसागरजी म. सा. ने कहा- पूज्यश्री का जीवन अपने आप में अनूठा और अद्‌भुत था। उनकी साधना में चमत्कार था। पूज्यश्री ने संस्मरण सुनाते हुए कहा- वे अत्यन्त कठोर थे और अत्यन्त मृदु थे। आज मैं जो कुछ भी हूँ, वह उनकी कृपा का ही परिणाम है।

पूज्यश्री ने भावुक होकर पूज्य आचार्यश्री के अन्तिम समय की व्याख्या की। उन्होंने कहा- पूज्य गुरुदेवश्री को अपने अन्तिम समय का बोध हो चुका था। इस कारण मिगसर वदि 6 के दिन ही उन्होंने मुझे, मनोज्ञसागरजी एवं उपस्थित श्री मोहनलालजी मुथा आदि श्रावकों के सामने अपने अन्तिम समय की घोषणा करते हुए कहा था- अब मेरा समय आ गया है। 20 घंटों का ही जीवन बचा है।

और हमारे देखते देखते वे हमें निराधार छोड कर चले गये। यह उनकी साधना का ही परिणाम था कि अग्नि संस्कार के समय उन्होंने अपना हाथ उठा कर सारी जनता को अपना आशीर्वाद प्रदान किया।

पूज्य मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म. ने संचालन करते हुए पूज्यश्री की कई घटनाओं को सुना कर उनके चमत्कृत व्यक्तित्व के पहलुओं को उजागर किया। उन्होंने कहा- वे क्रान्तिकारी थे, वे राष्ट्रवादी थे, वे अध्यात्म जगत के सूर्य थे, वे जीवन की कला सिखाने वाले प्रखर प्रवचनकार थे, वे कवि थे, लेखक थे। ऐसा कोई भी गुण नहीं, जो उनमें नहीं था।

पूजनीया साध्वी डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म. ने कहा- पूज्य आचार्यश्री शिल्पकार थे। उनकी सबसे बडी महान् रचना है- पूज्य गुरुदेव मणिप्रभसागरजी म.! जहाज मंदिर मांडवला पूज्यश्री की स्मृति में ही निर्मित हुआ है।

इस अवसर पर इचलकरंजी दादावाडी संघ के पूर्व अध्यक्ष संपतराजजी संखलेचा, वर्तमान सचिव रमेशजी लूंकड, सौ. श्रीमती कविता ललवानी, भरतभाई ओसवाल जयसिंगपुर, रमेशजी चौधरी जयसिंगपुर आदि ने अपने विचार व गीत द्वारा पूज्य आचार्यश्री को अपनी भावभरी श्रद्‌धांजली अर्पण की।

सभा के प्रारंभ में पूज्यश्री की प्रतिकृति के सामने दीप प्रज्ज्वलन किया गया एवं पुष्पहार चढाया गया। समारोह के पश्चात् श्री छगनलालजी चौधरी रमणिया वालों की ओर से स्वामिवात्सल्य का आयोजन किया गया। इस अवसर पर इचलकरंजी, सांगली, मल्हारपेठ आदि क्षेत्रों से बडी संख्या में लोग पधारे।

चेन्नई में माता पुत्र की भागवती दीक्षा

चेन्नई नगर में नागोर निवासी श्री योगेशकुमारजी सेठिया की धर्मपत्नी श्रीमती जयादेवी एवं उनके सुपुत्र मुमुक्षु संयम कुमार सेठिया की भागवती दीक्षा वैशाख सुदि 7 शनिवार ता. 25 अप्रेल 2015 को शुभ मुहूर्त्त में संपन्न होगी। उनकी दीक्षा की जय इचलकरंजी में ता. 8 नवम्बर को बुलाई गई। श्रीमती जयादेवी व संयम ने पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. से चतुर्विध संघ की साक्षी में विनंती की कि वे दीक्षा का शुभ मुहूर्त्त प्रदान करें।

उसका भावप्रवण वक्तव्य सुनकर उपस्थित विशाल जन सभा मंत्र मुग्ध हो गई। संयम व उसकी मां ने अपने विचारों को अत्यन्त दृढता के साथ प्रस्तुत किया। दीक्षा की जय बुलवाने अपने परिजनों व धर्मनाथ मंदिर के आगेवानों के साथ इचलकरंजी पधारे।

मुमुक्षु जयादेवी सेठिया ने कहा- गुरुवरों का सानिध्य प्राप्त होने के कारण मैंने संसार की असारता का बोध प्राप्त

करके मुझे तो संयम ग्रहण ही करना था। मैं अपने पुत्र को उस सुख का स्वामी नहीं बनाना चाहती, जो दुख में बदल जाता हो, अपितु मैं चाहती हूँ कि वह उस सुख को प्राप्त करे, जो कभी भी पीडा में परिवर्तित न हो। मुमुक्षु संयम ने कहा- इस संसार में लेने जैसा संयम ही है। पाने जैसा मोक्ष ही है। मेरी छोटी उम्र पर मत जाना। क्योंकि संयम का मापदण्ड उम्र से नहीं, संस्कारों और भावों पर है। और तभी तो पूर्व समय में छोटे छोटे मुनियों ने केवलज्ञान प्राप्त कर मोक्ष पा लिया।

उसने कहा- दादा गुरुदेव आदि जितने भी महान् आचार्य हुए हैं, उन्होंने छोटी उम्र में ही दीक्षा ली थी। मैं भाग्यशाली हूँ जो मुझे पूज्य गुरुदेवश्री प्राप्त हुए। मैं अपनी मां को नमन करता हूँ, जिसने मुझे केवल पाल पोस कर ही बडा नहीं किया, अपितु मुझे जीवन की कला सिखाई। मुझे शाश्वत सुख का मार्ग दिखाया। पूजनीया गुरुवर्या श्री सुलोचनाश्रीजी म.सा. सुलक्षणाश्रीजी म.सा. का मुझ पर अनंत उपकार है, जिन्होंने मुझे शिक्षा दी। ओ गुरुदेव! अब देर न करो, जल्दी से दीक्षा के शुभ मुहूर्त्त की उद्घोषणा करो। मैं वह तिथि सुनने के लिये बेचैन हूँ, जिस दिन मेरे जीवन में संयम का स्वर्णोदय होगा।

पूज्यश्री ने उनकी भावनाओं का सम्मान करते हुए वैशाख सुदि 7 का शुभ मुहूर्त्त प्रदान किया। मुहूर्त्त की उद्घोषणा होते ही सकल संघ में आनंद व हर्ष का वातावरण छा गया। यह ज्ञातव्य है कि चेन्नई में धर्मनाथ जिन मंदिर की अंजनशलाका प्रतिष्ठा 26 अप्रेल को होगी।

इस अवसर पर पूज्य मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म. ने कहा- संयम तलवार की धार पर चलने से भी कठिन है। संयम के कारण ही इन्द्र नरेन्द्र और चक्रवर्ती भी संत जनों के चरणों की धूल को माथे से लगाकर अपने जीवन में सुख और शांति का अनुभव किया करते हैं।

मुमुक्षु संयम पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. के पास एवं उनकी माताजी श्रीमती जयादेवी पूजनीया पार्श्वमणि तीर्थ प्रेरिका साध्वी श्री सुलोचनाश्रीजी म.सा. के पास संयम ग्रहण करेंगे। 12 वर्षीय मुमुक्षु संयम सेठिया ने पंच प्रतिक्रमण, चार प्रकरण, तीन भाष्य, पांच कर्मग्रन्थ, तत्वार्थ सूत्र, वीतराग स्तोत्र, संस्कृत आदि का अभ्यास किया है। उसने दो वर्ष पूर्व मात्र 10 वर्ष की उम्र में उपधान तप की आराधना की थी।

पूज्यश्री का कार्यक्रम

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. आदि ठाणा 5 एवं पूजनीया साध्वी डॉ. श्री नीलांजनाश्रीजी म. आदि ठाणा 4 ने इचलकरंजी में चातुर्मास की संपन्नता एवं तत्पश्चात् श्रीमती पिस्तादेवी छगनलालजी छाजेड परिवार द्वारा आयोजित चार दिवसीय छह री पालित संघ यात्रा के आयोजन के पश्चात् कुंभोजगिरि से विहार कर जयसिंगपुर पधारे। वहाँ पूज्य गुरुदेव आचार्यश्री की 29वीं पुण्यतिथि के आयोजन के पश्चात् सांगली पधारे। वहाँ एक दिवसीय प्रवास के पश्चात् कुरूंदवाड, मजरेवाडी, चिकोडी, बेलगावी, धारवाड होते हुए ता. 28 नवम्बर को हुब्बल्ली में प्रवेश किया है।

ता. 6 दिसम्बर को आदिनाथ मंदिर एवं दादावाडी की अंजनशलाका प्रतिष्ठा एवं छह मुमुक्षु बालिकाओं की दीक्षा के पश्चात् विहार कर गदग होते हुए कोप्पल पधारेंगे। वहॉ उनकी पावन निश्रा में चार मंगल मूर्तियों की प्रतिष्ठा 11 दिसम्बर को होगी। शाम को ही वहॉ से हॉस्पेट की ओर विहार करेंगे। जहाँ उनकी निश्रा में ता. 12 को पार्श्व पद्मावती आराधना भवन का उद्घाटन संपन्न होगा। वहॉ से विहार कर ता. 14 दिसम्बर को बल्लारी पधारेंगे। जहाँ ता. 15 को कुमारी शिल्पा बालड की भागवती दीक्षा संपन्न होगी। वहाँ से पूज्यश्री विहार कर जनवरी के प्रारंभ में बंगलुरू पधारेंगे। तीन चार दिवसीय स्थिरता के पश्चात् ईरोड की ओर विहार करेंगे, जहाँ ता. 21 जनवरी 2015 को विमलनाथ मंदिर एवं दादावाडी की अंजनशलाका प्रतिष्ठा संपन्न होगी।

पता-
पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.
द्वारा-
C/o SANGHVI VIJAYRAJ DOSI
APANA INVESTMENT
60 KILLARI ROAD
BANGALORE 560003
KNTK
मुकेश- 08088210588

छह री पालित संघ संपन्न

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री मयंकप्रभसागरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री मेहुलप्रभसागरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री समयप्रभसागरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री विरक्तप्रभसागरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री श्रेयांसप्रभसागरजी म. ठाणा 7 एवं पूजनीया बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. की शिष्या पूजनीया साध्वी डॉ. श्री नीलांजनाश्रीजी म.सा. पू. साध्वी श्री विभांजनाश्रीजी म. सा. पू. साध्वी श्री निष्ठांजनाश्रीजी म.सा. पू. साध्वी श्री आज्ञांजनाश्रीजी म.सा. ठाणा 4 की परम पावन निश्रा में गढ सिवाना निवासी श्रीमती पिस्तादेवी छगनलालजी छाजेड परिवार की ओर से ता. 6 से 8 नवम्बर तक त्रिदिवसीय जीवित महोत्सव का आयोजन किया गया। दादा गुरुदेव की पूजा, सिद्धचक्र महापूजन एवं महावीर षट्कल्याणक पूजा पढाई गई। मातृ पितृ वंदना का अनूठा कार्यक्रम संपन्न हुआ। पूज्यश्री ने जीवित महोत्सव की महिमा एवं रहस्य समझाते हुए मिच्छामि दुक्कडम् करवाया।

ता. 9 से 12 नवम्बर तक चार दिवसीय छह री पालित संघ का आयोजन किया गया। संघ शिरोडी सीमंधर धाम तीर्थ, वडगांव होता हुआ ता. 12 को कुंभोजगिरि पहुँचा। यात्रा की संपन्नता के पश्चात् संघ माला का विधान करवाकर छाजेड परिवार के श्रीमती पिस्ता देवी, श्री रिषभलालजी, मांगीलालजी, केसरीमलजी छाजेड परिवार को संघपति प्रदान किया गया।

श्री कुंभोजगिरि तीर्थ ट्रस्ट, पदयात्री संघ, श्री जैन श्वे. मणिधारी जिनचन्द्रसूरि दादावाडी संघ, इचलकरंजी, राजस्थानी जैन श्वे. मूर्तिपूजक संघ इचलकरंजी, श्री सिवांची ओसवाल जैन संघ इचलकरंजी, श्री तेरापंथ सभा, श्री स्थानकवासी सभा, छाजेड परिवार इचलकरंजी, नाकोडा युवक मंडल, जे. एफ. सी. भारतीय जैन संघटना आदि विविध संघों द्वारा संघपति परिवार का बहुमान किया गया।

कुंभोजगिरि तीर्थ एवं संघपति परिवार की ओर से दीक्षार्थी संयम सेठिया एवं श्रीमती जयादेवी सेठिया का बहुमान किया गया।

प्रवेश द्वार का उद्घाटन

श्री कुंभोजगिरि तीर्थ पर श्री नाकोडा भैरव, श्री माणिभद्रवीर, श्री पद्मावतीदेवी के मुख्य द्वार का उद्घाटन पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. आदि साधु साध्वी मंडल की पावन निश्रा में छह री पालित संघ के प्रवेश पर किया गया। इसका लाभ संघवी शा. माणकचंदजी विरदीचंदजी ललवानी परिवार सिवाना वालों ने प्राप्त किया।

हुबली नगर में प्रतिष्ठा निमित्त भव्य प्रवेश संपन्न

पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्य पूज्य गुरुदेव उपाध्याय प्रवर श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री समयप्रभसागरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री विरक्तप्रभसागरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री श्रेयांसप्रभसागरजी म. एवं पूजनीया महत्तरा पद विभूषिता श्री चम्पाश्रीजी म.सा. की शिष्या दादावाडी प्रेरिका मारवाड ज्योति श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म.सा. पूर्णप्रभाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा, पूजनीया साध्वी श्री डॉ. श्री प्रियलताश्रीजी म. आदि ठाणा एवं पूजनीया साध्वी डॉ. श्री नीलांजनाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा का हुबली नगर में भव्य नगर प्रवेश ता. 28 नवम्बर को अत्यन्त आनंद व उल्लास के साथ संपन्न हुआ।

इस अवसर पर संघ की विनती को स्वीकार कर पूज्य पंन्यास श्री महेन्द्रसागरजी म. आदि ठाणा 3 भी उग्र विहार कर पधारे।

परमात्मा आदिनाथ आदि जिन बिंब, दादा गुरुदेव बिंब, देवी देवताओं की प्रतिमाओं के साथ वरघोडे का प्रारंभ अरिहंत नगर केश्वापुर से हुआ जो हुबली के विभिन्न प्रमुख मार्गों से गुजरता हुआ दादावाडी प्रांगण में पहुँचा। शोभायात्रा एक कि. मी. से अधिक लम्बी थी और चारों तरफ विशाल जनसमूह नजर आ रहा था। इस शोभायात्रा को हरी झंडी दिखाई बेलगावी बेलूर मठ के अधिपति संत श्री निजगुणानंदस्वामी एवं स्थानीय विधायक श्री प्रसाद अभय्या ने!

प्रवेश के साथ ही विनीता नगर, कुशल नगर, कांति मणि नगर का उद्घाटन हुआ। इस अवसर पर पूज्यश्री ने कहा– दुख में जब कोई हम पर छोटा सा उपकार करता है, तो हम जीवन भर नहीं भूलते। दादा गुरुदेव ने हमारे पूर्वजों को जैन

बनाकर जीवन जीने की जो कला दी है, जो धर्म दिया है, उस उपकार को हम कैसे भूल सकते हैं! दादावाडी हमारे अन्तर्भावों की कृतज्ञता का परिणाम है।

ज्ञान ध्यान आदि का कार्य करने वाले तो अनेक आचार्य हुए पर दादा गुरुदेव का संबोधन प्राप्त करने वाले हमारे उपकारी चार आचार्य ही हुए हैं।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए पूज्य मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म. ने कहा- दादावाडी का जो परिसर भक्ति, शक्ति और मुक्ति की खुश्बू से महक रहा है, वह प्रभु कृपा, गुरु अनुग्रह और साध्वीश्री सूर्यप्रभाश्रीजी म. पूर्णप्रभाश्रीजी म. की प्रेरणा व पुरूषार्थ का परिणाम है।

इस भूमि को तीर्थ समान बताते हुए कहा- जहाज मंदिर मांडवला में पूज्य गुरुदेवश्री के गुरुदेव आचार्यश्री का स्वर्गवास हुआ था तो इस भूमि में पूज्य गुरुदेवश्री के सांसारिक पिताश्री एवं मेरे ताऊजी श्री पारसमलजी का स्वर्गवास हुआ था। 'मणि' की कान्ति पारस की कान्ति के कारण है।

इस अवसर पर पंन्यास श्री महेन्द्रसागरजी म., पू. साध्वी श्री हर्षप्रज्ञाश्रीजी म., मुमुक्षु प्रिंसी कवाड, शुभम् लूंकड, पुखराजजी संघवी, पुखराज कवाड आदि ने भी अपने उद्‌गार व्यक्त किये। मधुवन बालिका मंडल ने सुन्दर नृत्य प्रस्तुत किया।

प्रसिद्ध बाल कलाकार संयम नाबेडा हैदराबाद ने अपने अनूठे अंदाज में सुरीले कण्ठ से जब गीत-संगीत का जादू बिखेरा तो जन समूह झूमने पर मजबूर हो गया।

ता. 30 को कुंभस्थापना आदि विधान संपन्न हुआ। इस अवसर पर कर्णाटक के पूर्व मुख्यमंत्री एवं भाजपा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री बी.एस. येडियुरप्पा, हुबली सांसद एवं कर्णाटक भाजपा अध्यक्ष श्री प्रह्लादजी जोशी, पूर्व मंत्री श्री बसवराज बोम्मई का आगमन हुआ। उन्होंने पूज्यश्री से आशीर्वाद ग्रहण किया। प्रतिष्ठा समिति के संयोजक श्री रमेश बाफना आदि ने उनका बहुमान किया। जिन मंदिर दादावाडी के दर्शन कर उन्होंने अपने अन्तर की प्रसन्नता व्यक्त की।

सिवांची भवन का खात मुहूर्त्त

श्री सिवांची संघ हुबली के तत्वावधान में दादावाडी परिसर के पास ही सिवांची भवन का खात मुहूर्त्त पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. आदि मुनि मंडल के सानिध्य में ता. 1 दिसम्बर को किया गया। जिसका लाभ पादरू निवासी श्री अशोककुमारजी गौतमचंदजी जयन्तिलालजी गोलेच्छा परिवार द्वारा लिया गया। इस अवसर पर भवन हेतु श्रद्धालुओं द्वारा कमरों का लाभ लिया गया। उनका बहुमान किया गया।

साधु साध्वी समाचार

0 पूज्य ब्रह्मसर तीर्थोद्धारक मुनिराज श्री मनोज्ञसागरजी म. पू. नयज्ञसागरजी म. सूरत से विहार कर पालीताना पधार रहे हैं। वे 20 दिसम्बर के आसपास पालीताना पहुँचेंगे। वहाँ 5-7 दिनों की स्थिरता के पश्चात् अहमदाबाद की ओर विहार करेंगे।

0 पूज्य मुनि श्री मयंकप्रभसागरजी म. मेहुलप्रभसागरजी म. इचलकरंजी से विहार कर पूना, कल्याण, सूरत, बडौदा होते हुए अध्ययन के लक्ष्य से पालीताना पधार रहे हैं। उनके जनवरी के तीसरे सप्ताह के प्रारंभ में पालीताना पधारने की संभावना है।

0 पूजनीया साध्वी श्री मणिप्रभाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा पावापुरी से छत्तीसगढ की ओर विहार कर रहे हैं। कैवल्यधाम प्रतिष्ठा की वर्षगांठ पर निश्रा प्रदान करेंगे। वहाँ से मालवा प्रदेश की ओर विहार करने की संभावना है।

0 पूजनीया पार्श्वमणि तीर्थ प्रेरिका साध्वी श्री सुलोचनाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा दिल्ली से विहार कर 27 नवम्बर को आगरा पधारे, वहाँ से ग्वालियर, नागपुर होते हुए चेन्नई पधार रहे हैं। वे अप्रेल महिने में चेन्नई पधारेंगे। वहाँ होने वाले प्रतिष्ठा एवं दीक्षा समारोह को अपनी सानिध्यता प्रदान करेंगे।

0 पूजनीया महातपस्वी साध्वी श्री सुलक्षणाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा 4 ने नई दिल्ली छोटी दादावाडी से 4 दिसम्बर को राजस्थान की ओर विहार किया है।

0 पूजनीया माताजी म. श्री रतनमालाश्रीजी म.सा., पूजनीया बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. ठाणा ने नंदुरबार के यशस्वी एवं ऐतिहासिक चातुर्मास की संपन्नता के पश्चात् अक्कलकुआं पधारे। जिन मंदिर दादावाडी के शिलान्यास समारोह के पश्चात् नंदुरबार होते हुए बलसाणा तीर्थ की यात्रा कर ता. 22 नवम्बर को मालेगांव

पधारे। पंच दिवसीय प्रवचनश्रेणि ता. 27 को धूलिया की ओर विहार किया। वहाँ से जलगांव, अमरावती, नागपुर होते हुए रायपुर-छत्तीसगढ की ओर विहार करेंगे।

0 पूजनीया धवल यशस्वी साध्वी श्री विमलप्रभाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा बैंगलोर से विहार कर हुबली पधारे हैं।

0 पूजनीया साध्वी श्री कल्पलताश्रीजी म.सा. आदि ठाणा अहमदाबाद चातुर्मास की संपन्नता के पश्चात् सांचोर होते हुए विहार कर चौहटन पधार गये हैं।

0 पूजनीया साध्वी श्री विरागज्योतिश्रीजी म.सा. विश्वज्योतिश्रीजी म.सा. ठाणा 3 जलगांव का ऐतिहासिक चातुर्मास संपन्न कर प्रतिष्ठा, स्थानक में सार्वजनिक प्रवचन, गृहांगण पदार्पण आदि कई कार्यक्रमों के पश्चात् विहार कर धरणगांव, अमलनेर, धूलिया, मालेगांव होते हुए 8 दिसम्बर तक नाशिक पधारेंगे। कुछ समय की स्थिरता के पश्चात् दक्षिण प्रान्त की ओर विहार करेंगे।

0 पूजनीया साध्वी श्री पूर्णप्रभाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा बीजापुर में एवं पूजनीया साध्वी श्री अमितगुणाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा गदग में यशस्वी चातुर्मास संपन्न कर प्रतिष्ठा एवं दीक्षा समारोह हेतु विहार कर हुबली पधार गये हैं।

0 पूजनीया साध्वी डॉ. श्री सौम्यगुणाश्रीजी म.सा. ठाणा 4 बाडमेर नगर के ऐतिहासिक चातुर्मास की संपन्नता के पश्चात् चौहटन नगर में प्रारंभ हो रहे उपधान तप में अपनी सानिध्यता प्रदान करने पधारे हैं। वहाँ से वे बाडमेर पधारेंगे, जहाँ से ता. 4 दिसम्बर 2014 को उनकी निश्रा में जैसलमेर ब्रह्मसर का पैदल संघ आयोजित होगा।

0 पूजनीया साध्वी श्री प्रियरंजनाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा अहमदाबाद से विहार ईडर, हिम्मतनगर होते हुए धोलका पधार रहे हैं। पौष दशमी तक वहीं बिराजेंगे।

चातुर्मास विदाई समारोह

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री मयंकप्रभसागरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री मेहुलप्रभसागरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री समयप्रभसागरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री विरक्तप्रभसागरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री श्रेयांसप्रभसागरजी म. ठाणा 7 एवं पूजनीया बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. की शिष्या पूजनीया साध्वी डॉ. श्री नीलांजनाश्रीजी म.सा. पू. साध्वी श्री विभांजनाश्रीजी म. सा. पू. साध्वी श्री निष्ठांजनाश्रीजी म.सा. पू. साध्वी श्री आज्ञांजनाश्रीजी म.सा. ठाणा 4 का इचलकरंजी नगर में ऐतिहासिक चातुर्मास संपन्न हुआ। इचलकरंजी में ऐसा चातुर्मास कभी नहीं हुआ।

ता. 5 नवम्बर 2014 को श्री मणिधारी दादावाडी संघ की ओर से विदाई समारोह का आयोजन किया गया। जिसमें अलग अलग समाज के वक्ताओं ने पूज्यश्री के इस चातुर्मास को ऐतिहासिक बताते हुए कहा- पूज्यश्री को हम कभी नहीं भूल पायेंगे।

इस अवसर पर पूज्यश्री ने, पू. मनितप्रभसागरजी म. ने एवं पू. साध्वी डॉ. नीलांजनाश्रीजी म.सा. ने अपनी भावप्रवण वक्तव्यों द्वारा इचलकरंजी संघ की भावभक्ति, एकता, श्रवण रूचि, धर्मश्रद्धा की सराहना की। संचालन संघ के सचिव रमेश लूंकड ने किया।

श्री लूंकड परिवार का अभिनंदन

इचलकरंजी नगर में पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. आदि ठाणा 7 एवं पूजनीया साध्वी डॉ. श्री नीलांजनाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा 4 के यशस्वी चातुर्मास में संपूर्ण साधर्मिक वात्सल्य का लाभ लेने वाले पूज्य गुरुदेवश्री के सांसारिक चाचा श्री बाबुलालजी लूंकड परिवार का श्री जैन श्वेताम्बर मणिधारी जिनचन्द्रसूरि जैन संघ इचलकरंजी की ओर से हार्दिक अभिनंदन किया गया। ता. 8 नवम्बर को श्री संघ द्वारा अभिनंदन पत्र अर्पण किया।

इस अवसर पर पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री एवं सांसारिक पुत्री साध्वी पूजनीया डॉ. श्री नीलांजनाश्रीजी म.सा. ने स्फटिक रत्न मयी प्रतिमा प्रदान की।

हॉस्पेट में आराधना भवन का उद्घाटन
कर्णाटक के राज्यपाल आयेंगे

हॉस्पेट नगर के एम.जे. नगर में शा. गिरधारीलालजी पालरेचा परिवार द्वारा नवनिर्मित श्री पार्श्व पद्मावती आराधना भवन का उद्घाटन परम पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. की परम पावन निश्रा में ता. 12 दिसम्बर 2014 को प्रातः 9 बजे कर्णाटक के राज्यपाल महामहिम श्री वजुभाई रूडाभाई वाला के करकमलों द्वारा संपन्न होगा।

यह ज्ञातव्य है कि लौहनगरी हॉस्पेट के एम. जे. नगर में श्री वासुपूज्य स्वामि जिन मंदिर, दादावाडी एवं श्रीमद् राजचन्द्र ध्यान मंदिर का निर्माण पूर्व में आप द्वारा ही स्वद्रव्य से करवाया गया था। उसकी प्रतिष्ठा पूज्य गुरुदेव श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. की पावन निश्रा में ही ता. 25 जनवरी 2008 को संपन्न हुई थी। उसके पास ही स्वद्रव्य से इस आराधना भवन का निर्माण करवाया गया है।

पूज्य गुरुदेवश्री 6 दिसम्बर को हुबली में अंजनशलाका प्रतिष्ठा एवं दीक्षा समारोह की संपन्नता के पश्चात् कोप्पल, गदग होते हुए ता. 12 को हॉस्पेट पधारेंगे। प्रवेश के साथ ही उद्घाटन समारोह संपन्न होगा।

पेढी की जनरल मीटींग कन्याकुमारी में

श्री जिनदत्त-कुशलसूरि खरतरगच्छ पेढी की साधारण सभा की बैठक ता. 27 फरवरी 2015 को दोपहर 2 बजे कन्याकुमारी में पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. की पावन निश्रा एवं पेढी के अध्यक्ष श्री मोहनचंदजी ढड्ढा की अध्यक्षता में आयोजित होगी।

कन्याकुमारी में श्री महावीर स्वामी जिन मंदिर, दादावाडी एवं गुरुमंदिर की अंजनशलाका प्रतिष्ठा ता. 27 फरवरी 2015 को प्रातः 8 बजे संपन्न होगी।

पेढी के महामंत्री संघवी श्री वंशराजजी भंसाली ने बताया कि इस अवसर पर पेढी के समस्त सदस्यों से पधारने का हार्दिक अनुरोध है।

ईरोड में जिनमंदिर एवं दादावाडी का निर्माण

तमिलनाडु के प्रसिद्ध नगर ईरोड नगर में वलयकारा स्ट्रीट में श्री मुनिसुव्रतस्वामी जिन मंदिर एवं श्री जिनकुशलसूरि दादावाडी का निर्माण होने जा रहा है।

इस मंदिर एवं दादावाडी का संपूर्ण निर्माण पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. की पावन प्रेरणा से शासन रत्न श्री मनोजकुमारजी हरण के मार्गदर्शन में मूल लोहावट निवासी जेठिया ग्रुप के श्री जवाहरलालजी प्रदीपकुमारजी शरदकुमारजी पारख परिवार राजीम-ईरोड वालों की ओर से करवाया जा रहा है।

पूज्य गुरुदेवश्री के दक्षिण प्रदेश के प्रवास को ख्याल में रखते हुए जिन मंदिर दादावाडी का निर्माण शीघ्र गति से करवाया जा रहा है।

इस जिनमंदिर दादावाडी की अंजनशलाका ता. 21 जनवरी 2015 को माघ शुक्ल प्रतिपदा बुधवार को पूज्यश्री की पावन निश्रा में संपन्न होगी। इस प्रतिष्ठा हेतु पूज्यश्री का नगर प्रवेश 19 जनवरी को होगा। ता. 20 को वरघोडा निकाला जायेगा। ता. 21 को प्रतिष्ठा का विधान संपन्न होगा।

जलगांव में दादा गुरुदेव की प्रतिष्ठा

जलगांव में श्री सुमतिलालजी टाटिया परिवार द्वारा स्वद्रव्य से निर्मित गृह मंदिर में अनंत लब्धि निधान गौतमस्वामी, दादा गुरुदेवश्री जिनकुशलसूरीश्वरजी म.सा. एवं पद्मावती देवी की प्रतिष्ठा अत्यन्त हर्षोल्लास के साथ पूजनीया साध्वी श्री विरागज्योतिश्रीजी म.सा. विश्वज्योतिश्रीजी म.सा. जिनज्योतिश्रीजी म.सा. की पावन निश्रा में मिगसर वदि 4 ता. 10 नवम्बर 2014 को संपन्न हुई।

ता. 9 नवम्बर को दादा जिनकुशलसूरि की जन्म जयंती का आयोजन किया गया। इस अवसर पर पूजनीया साध्वी श्री विश्वज्योतिश्रीजी म.सा. ने गुरुदेव के दिव्य व्यक्तित्व का विस्तार से विवेचन किया। इस उपलक्ष्य में दादा गुरुदेव का महापूजन पढाया गया। प्रतिष्ठा के दिन टाटिया परिवार की ओर से स्वामिवात्सल्य का आयोजन किया गया।

सूरत में नाकोडा भैरव महापूजन संपन्न

पूज्य ब्रह्मसर तीर्थोद्धारक मुनि श्री मनोज्ञसागरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री नयज्ञसागरजी म. नवसारी के प्रभावक चातुर्मास के पश्चात् विहार कर सूरत पधारे। वहाँ उनकी निश्रा में 16 नवम्बर 2014 को श्री नाकोडा भैरव महापूजन का 108 जोडों के साथ भव्य आयोजन हुआ। यह आयोजन श्री भैरवसूट हाउस एण्ड कलश क्रियेशन वाले श्रीमती शांतिदेवी हुक्मीचंदजी भंसाली परिवार चेलक वालों द्वारा पूज्यश्री की प्रेरणा से किया गया। इस आयोजन में अपार भीड उपस्थित थी। इस महापूजन में संगीत की धूम मचाने के लिये मुंबई से सुप्रसिद्ध संगीतकार प्राची एण्ड पार्टी का आगमन हुआ था।

श्री लूंकड परिवार का अभिनंदन

इचलकरंजी नगर में पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. आदि ठाणा 7 एवं पूजनीया साध्वी डॉ. श्री नीलांजनाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा 4 के यशस्वी चातुर्मास में संपूर्ण साधर्मिक वात्सल्य का लाभ लेने वाले पूज्य गुरुदेवश्री के सांसारिक चाचा श्री बाबुलालजी लूंकड परिवार का श्री जैन श्वेताम्बर मणिधारी जिनचन्द्रसूरि जैन संघ इचलकरंजी की ओर से हार्दिक अभिनंदन किया गया। ता. 8 नवम्बर को श्री संघ द्वारा अभिनंदन पत्र अर्पण किया।

इस अवसर पर पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री एवं सांसारिक पुत्री साध्वी पूजनीया डॉ. श्री नीलांजनाश्रीजी म.सा. ने स्फटिक रत्न मयी प्रतिमा प्रदान की।

बाडमेर के चेयरमेन श्री बोथरा बने

बाडमेर नगर पालिका के चुनाव में श्री लूणकरणजी बोथरा चेयरमेन चुने गये। श्री बोथराजी श्री कुशल वाटिका बाडमेर के सक्रिय ट्रस्टी है। वे श्री नाकोडाजी तीर्थ के भी ट्रस्टी है। जहाज मंदिर परिवार आपको हार्दिक बधाई अर्पण करता है।

सादर श्रद्धांजली

बाडमेर निवासी श्री मगराजजी जैन का स्वर्गवास हो गया। उनको भारत सरकार द्वारा पद्मश्री पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। वे कुशल वाटिका बाडमेर के प्रथम महामंत्री थे। उन्होंने नेहरू युवक केन्द्र से जुडकर मानव समाज के हित में बहुत कार्य किया था। अत्यन्त सरल स्वभावी श्री जैन सा. रचनात्मक कार्यों में विशेष रूचि रखते थे। उनके स्वर्गवास से समाज को बहुत क्षति हुई है। जहाज मंदिर परिवार की ओर से हार्दिक श्रद्धांजली अर्पित है।

प्रेषक
जहाज मंदिर कार्यालय